International Journal of Applied Research 2019; 5(7): 528-529

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(7): 528-529
www.allresearchjournal.com
Received: 13-05-2019
Accepted: 15-06-2019

रंजीता कुमारी
शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रंजीता कुमारी
शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा, बिहार, भारत

बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास में पारिवारिक शिक्षा की भूमिका

रंजीता कुमारी

सारांश
परिवार के सारे सदस्य एक–दूसरे के साथ किस प्रकार का व्यवहार करते है, तो वह भी दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना सीख जाता हैं, यही नहीं परिवार में रहते हुए उसे शारीरिक, कलात्मक तथा नैतिक सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्त होती है। वह माता से प्रेम, भाई–बहनों से मातृत्व भावना तथा पिता से न्याय आदि नैतिक आदर्शों की शिक्षा प्राप्त करता है। इस प्रकार उसकी पाश्विक प्रवृतियाँ मानवीय गुणों में परिवर्तित होती रहती है। इस प्रकार परिवारिक शिक्षा बालक के व्यक्तित्व की ऐसी आधारशीला बन जाती है। जिसे वह अपने जीवन पर्यन्त कभी नहीं भूलता। चूँकि प्रत्येक परिवार के प्रभाव अलग–अलग होते है इसलिए बालक दूसरे बालकों से भिन्न होता है। परिवार एक छोटी सी समाजिक संस्था है जिसमें रहते हुए बालक माता–पिता के अतिरिक्त भाई–बहनों तथा अन्य संबंधियों के संपर्क में आता है। इस सभी का अपना–अपना, अलग–अलग कार्य होता है। यह कार्य स्थिर नहीं होता। सभी सदस्य एक दूसरे के साथ आदान–प्रदान करते है तथा एक दूसरे पर अपना प्रभाव डालते है। बालक भी परिवार के प्रत्येक सदस्य से प्रत्येक क्षण प्रभावित होता रहता है। इस प्रभाव से वह समाज के तौर–तरीके सीखता है तथा अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

प्रस्तावना
शिक्षा व्यक्ति को बदलते हुए समाज की आवश्यकताओं के अनुसार समायोजित करने की योग्यताएँ अनुभव तथा अवसर प्रदान करती है। सुदृढ़ समाजिक प्रगति के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक राजनैतिक में सचेत योजनाओं की आवश्यकता होती है और इसमें शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बालक की शिक्षा में परिवार का बहुत महत्व है। बालक परिवार में ही उत्पन्न होता है और यही वह पहला साधन है जिससे समाजिकता की प्रथम शिक्षा उसे मिलती है। वह अपने परिवार द्वारा ही परम्पराओं, रीति–रिवाज आदि से अवगत होता है। वह परिवार में समायोजन चाहता है और उसमें प्रेम तथा घृणा के भावों का प्रादुर्भाव होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से बालक के ऊपर उसके परिवारिक प्रभाव का बहुत बड़ा महत्व है। भारत में परिवार का अब तक बहुत महत्व रहा, परन्तु अब संयुक्त परिवार टूटने के कारण यह कम होता जा रहा है परन्तु अब भी माता–पिता बालक को घर में एक अच्छा वातावरण प्रदान करने की चेष्टा करते है। परिवारिक प्रेम को अब भी आदर्श समझा जाता है। बालकों को समाजिक आदर्शों की शिक्षा यही दी जाती है और उन्हें सुघड़ व्यापार की विधियों से अवगत कराया जाता है। परन्तु आधुनिक काल में नये सामाजिक ढ़ाँचे के कारण परिवर्तन शीघ्रता से आ रहा है जो भविष्य के हितकर नहीं है। [1] शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सशक्त साधन है। यह शिक्षा ही है, जिसके द्वारा समाज अपने आप को आधुनिकता की ओर अग्रसर कर सकता है।

परिवार का महत्व वर्तमान समय में कम होता जा रहा है। प्राचीन काल में परिवार ही सब कुछ था। समाजिकता की भावना परिवारिक भावना से ही प्रगति पाती थी, परन्तु वर्तमान समय में समाज का ढ़ाचा बदला गया है और आर्थिक स्थिति क्षीण–भिन्न हो गयी है। परिवारिक जीवन पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। इस समय हर एक व्यक्ति को अपने लिए रोजी–रोटी की समस्या को हल करना है। आर्थिक स्थिति में परिवर्तन के कारण कोई भी व्यक्ति घर बैठकर दूसरे पर आश्रित होकर नहीं खा सकता। हर एक को कुछ न कुछ काम–धन्धा करना पड़ता है। इसके कारण संयुक्त परिवार नष्ट–भष्ट होता जा रहा है और एकल परिवार की स्थापना होने लगती है जिसमें पति–पत्नी ही मुख्य सदस्य रह गये है और माता–पिता को अलग रखने का दृष्टिकोण विकसित होने लगा है। यह एकल परिवार भी आजीविका कमाने में इतने व्यस्त है कि उन्हें अपने बच्चों को स्वंय शिक्षा देने का समय नहीं मिलता। आज इस प्रकार के अनके साधन उपलब्ध है जहाँ माता–पिता काम पर जाते समय अपने बच्चों को छोड़ जाते है और काम से वापस आने पर उन्हें ले जाते है। इस प्रकार का दृष्टिकोण बालकों के विकास की दृष्टि से अच्छा नहीं है। क्योंकि जो प्यार बालकों को माँ–बाप से

मिलता है उन्हें क्रेश नहीं मिल सकता जहाँ बच्चों को शुल्क देकर संभाला जाता है। सामाजिक परिवर्तन के परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव को हम निम्न बिंदुओं में व्यक्त कर सकते है।

- संयुक्त परिवार प्रणाली का लोप।
- संयुक्त परिवार का दृष्टिकोण।
- परिवार में शैक्षिक उपकरणों की सुलभता।
- ट्यूशन की परम्परा का विकास।

परिवार का प्रभाव के कम होने का एक कारण यह भी है कि मानव की आवश्यकता बहुत बढ़ गई है। उनका जीवन स्तर बढ़ गया है। परिवार उनको पूर्ण करने में असमर्थ है। अतएव परिवार का नियंत्रण कम होना स्वभाविक ही है। और परिवार द्वारा व्यसायिक, सामाजिक तथा नैतिक शिक्षा संभव नहीं है। समाज की व्यवस्था अब बहुत बदल गयी है। इस प्रकार हम देखते है कि वर्तमान काल में परिवार का महत्व बहुत कम हो गया है और इसका स्थान विद्यालय ने ले लिया है। [2]

परिवारिक वातावरण में बालक को क्या अच्छा है व क्या बुरा है इसका ज्ञान इस कारण कराया जाता है। जिससे बालक स्वंय को अच्छे के अनुकुल ढ़ाल कर अपने व्यक्तित्व के समाजिक पक्ष को विकसित कर सके। परिवार को इसी कारण सभी शिक्षाशास्त्र अनौपचारिक शिक्षा का महत्वपूर्ण साधन मानते है। चूँकि परिवार एक ऐसा प्राथमिक समूह है जहाँ बालक अपने जीवन का अधिकांश समय व्यतीत करता है व निरंन्तर रूप से कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। परिवार का शिक्षा से प्रत्यक्ष संबंध न होते हुए भी हम उससे शिक्षा के संबंध में कुछ अपेक्षा अवश्य रखते है। उन्हें ही हम परिवार के आवश्यक दायित्व या कर्तव्य की संज्ञा देते है। हम परिवार के शैक्षिक दायित्व पर दृष्टिकोण करे तो वे है –

- बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगिण विकास करना।
- बालक को स्वच्छता व सफाई का प्रशिक्षण देना।
- बालक के रूचियों को समझना व उनके विकास के उचित अवसर प्रदान करना।
- बालक के अंदर अच्छे आदतों का विकास कराना।
- बालक के आत्मविश्वास उत्पन्ना करना।

परन्तु बालक का सामाजिकरण करने हेतु परिवार को कुछ अलग प्रकार के दायित्वों का निर्वाह करना होता है, जैसा कि हम सभी जानते है कि समाजीकरण हेतु यह आवश्यक है कि बालक के व्यक्तित्व का सामाजिक पक्ष पूर्णतया विकसित होना चाहिए तथा उसका आचरण सामाजिक मूल्यों एवं समानताओं के उपर आधारित होना चाहिए। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि बालक का समाजीकरण करने में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। परिवार मानव समाज की मूलभूत सामाजिक संस्था है। यह बालक के शिक्षा के लिए भी प्रभावित पाठशाला है। जिसमें प्रथम शिक्षिका माता होती है। माता–पिता के अतिरिक्त परिवार के अन्य सदस्यों भाई–बहन इत्यादि का भी बालक की शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान होता है। वस्तुतः बालक की शिक्षा का श्रीगणेश परिवार से होता है और स्नेहसिक्त वातावरण में हुई शिक्षा बालक के जीवन का भिन्न अंग बनती हैं। व्यक्ति के जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था में ग्रहणशीलता एवं अनुकरण की बहुत क्षमता बालक में होती है। वह परिवार की भाषा रहन–सहन के ढ़ंग व्यवहार के तरीके मानवीय गुणों का ग्रहण सहज रूप में कर लेता है। समाजीकरण जो शिक्षा का अत्यंत उपयोगी व्यहारिक पक्ष है वह परिवार में ही होता है। परिवार में प्राप्त शिक्षा इतनी स्थायी होती है कि उसकी अमिट छाप प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व पर देखने को मिल जाएगी। [3]

वस्तुतः परिवार में प्रदत शिक्षा इस प्रकार की शिक्षा है जो बालक के समक्ष सर्वांगीण विकास का प्रयास करती है। परिवार शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण आधारभूत अभिकरण है जो कि मूल प्रवृतियों को लेकर जन्में बालक को सुसंस्कृत सामाजिक बनाता है। उसका शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक विकास करते हुए उसके व्यक्तित्व के सभी पक्षों का यथाशक्ति सम्यक संतुलित विकास करता हैं। [4]

परिवार अपने क्षमता, वातावरण आदि के अनुरूप कार्य कर पाता है इसलिए परिवारिक पृष्ठभूमि का लाभ उन बालकों को अधिक मिल पाता है। जिनके परिवार शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टि से संपन्न है। परिवार के पृष्ठभूमि में नकारात्मक तत्व होने पर उनका प्रभाव भी बालकों के व्यवहार पर आएगा अर्थात जैसा परिवार वैसा ही उसके बालक का विकास होगा इसलिए शिक्षा के इस सशक्तम अभिकरण को हमे सुढ़ृढ़ करना चाहिए। [5]

निष्कर्ष

भारत में परिवार अपने शैक्षणिक भूमिकाओं को समुचित रूप में निभाने में इसीलिए असमर्थ है कि अधिसंख्य भारतीय परिवार निर्धनता से ग्रस्त है। समाज की मूलभूत इकाई की परिवार की दशा सुधार के बिना भारतीय समाज का विकास संभव नहीं है। अतः सर्वाधिक आवश्यकता यह है कि हम परिवार को सशक्त एवं सुढ़ृढ़ बनायें क्योंकि इसी पर बालक एवं राष्ट्र का भविष्य निर्भर है। भारतीय परिवार की विशेषता सम्मिलित अथवा संयुक्त परिवार की रही है। इस परिवार में दादा–दादी ताउ–ताई, चाचा–चाची, के आपसी सहयोग से बालकों को स्नेह तथा सभी प्रकार के नैतिक धार्मिक एवं सामाजिक गुणों की शिक्षा अनायास ही मिल जाती है। परन्तु अब अनेक कारणों से संयुक्त परिवार छोटी–छोटी इकाइयों में बढ़ते जा रहे है। खेद का विषय है कि इन इकाई परिवार की अज्ञानता, निर्धनता अथवा अभिभावकों के ध्यान की कमी के कारण अब बालकों को वह स्वस्थ, सुंदर, स्वतंत्र वातावरण नहीं मिल पाता, जिसमें रहते हुए पुर्णरूपेण विकसित हो सके। अधिकांश परिवारों में बालकों का पालन–पोषण दूषित परिस्थियों में होता है। प्रायः निम्न कोटी के परिवार में तो बालकों के पालन–पोषण तथा शिक्षा की व्यवस्था अत्यंत सोचनीय है। जिन परिवार में माता तथा पिता दोनों नौकरी पर चले जाते है उनके बालक प्रायः सड़कों पर सुरक्षित रूप से घुमते दिखाई पड़ते है। यही नहीं, जिन परिवार में न ज्ञान का अभाव है और न अर्थ अभाव है उनमें भी बालकों को विकसित होने के लिए उपयुक्त बातावरण नहीं मिल पाता। चूँकि परिवार बालक की शिक्षा का प्रमुख स्थान है इसीलिए इसे प्रभावशाली बनाना अत्यंत परम आवश्यक है।

संदर्भ

1. गौतम डॉ. नीरज कुमार, शिक्षा मानव विकास का आधार स्तंभ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
2. सिंह डॉ. कुसुम लता, भारत में शिक्षा अधिकार – चुनौती एवं समस्याएं, नवनीत प्रकाशन, सागर, 2009
3. अग्निहोत्री रविन्द (2013), आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएँ एवं समाधान, जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 1937,
4. उपध्याय प्रतिभा (2017), भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियाँ चतुर्थ संशोधित संस्करण, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
5. गुप्ता एस. पी. (1995), भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन।